दुनिया का एक अजूबा : कोणार्क

स्नेहलता दास

सही सलामत को देखने को वक्त नहीं, मगर लोग टूटे-फूटे को देखने आते हैं । अजूबा न होता तो क्यों आते ?

बात तेरहवीं शताब्दी की है । ओड़िशा के एक प्रतापशाली राजा थे नरसिंह देव । उनकी कमर में हरदम एक तलवार लटकती रहती थी । वह पूँछ जैसी लगती थी । लोग प्यार से राजा को लांगुला नरसिंह देव कहते थे । उस वक्त बंगाल के नवाब बराबर ओड़िशा पर धावा बोल देते थे । नरसिंह देव ने नई तरकीब सोची । उन्होंने बंगाल पर आक्रमण किया, वहाँ के शासक को परास्त कर दिया । बड़ा काम किया । काफी धन मिला ।

एक रोज नरसिंह देव सागर के किनारे-किनारे घुड़सवारी कर रहे थे । झाऊ, पुन्नाग, केतकी, हेन्ताल जैसे तरुलताओं के बीच सुशीतल पगडंडी थी । समुद्र के ऊपर सूर्य उग रहा था । उसकी ललाई जलराशि पर निराली शोभा बिखेर रही थी। अब किरणें ऊँचे पेड़ों की ओट से झाँकने लगीं । राजा ने उस खूबसूरत दृश्य को देखकर सोचा-क्या सागर जल में ही कोई विशाल मंदिर नहीं बनाया जा सकता ? महाराज ने अपने सचिव शिबू सामन्तराय से इस विषय में चर्चा की । वे फौरन काम में लग गए ।

बड़े-बड़े पत्थर समुद्र में डलवाए गए । पर मंदिर की नींव नहीं जम पाई । सब लोग परेशान थे । एक दिन शिबू काफी थक गए । वे पास वाले गाँव की एक बुढ़िया की झोंपड़ी में विश्राम करने गए । बुढ़िया ने बड़ी आवभगत की । गर्म-गर्म खीर परोसी । शिबू ने खीर में उँगलियाँ डालीं तो वे जल गईं । बुढ़िया ने हँसकर ताना मारा - बेटा, तुम तो शिबेइ का भी कान काटते हो । वह समुन्दर के बीच पत्थर डलवा रहा है । तुम बीच थाली में से खीर खाते हो। किनारे से खाओ । शिबू का माथा ठनका । तरकीब निकल आई । एक किनारे से पत्थर डलावाए । नींव जम गई । मंदिर का काम तेजी से चलने लगा ।

राजा का हुक्म था- बड़े से बड़ा बनाओ । सो पहाड़नुमा बड़े-बड़े पत्थर जमा किए गए। बड़े-बड़े हाथी, बड़े-बड़े घोड़े, बड़े-बड़े सिंह, बड़े-बड़े वीर घुड़सवार । आदमकद मूर्तियाँ । सब विशालता, भव्यता, गौरव प्रकट करती हैं । नरसिंह देव के वीरत्व, वैभव, महत्व को उजागर करती हैं । शिबू ने मुख्य स्थपति बिशू महारणा से कहा- छोटी से छोटी, बारीक से बारीक मूर्तियाँ, लताएँ भी तो बन सकती हैं । बिशू ने विशाल मंदिर बनाया, सबसे ऊँचा 227 फुट ! एकदम नीचे कमल की पंखुड़ियाँ, उसके ऊपर रथ के आकार वाला विराट मंदिर रखा । बड़े-बड़े चौबीस पहिये लगाए । सात घोड़े । उनकी लगाम खींचकर विराजमान अश्वारोही । सच में मानों मंदिर पानी पर तैर रहा है । उसके तीन हिस्से-सामने नाट्य मंदिर। उसके पीछे एक पत्थर का बना विशाल चौंतीस फूट ऊँचा अरुण स्तम्भ था। उसके सोलह आयाम थे । बापरे, कितना मोटा ! (यह आजकल पुरी में है।) फिर मुखशाला उसके पीछे विमान या मुख्य मंदिर । सूर्यदेव की विशाल मूर्तियाँ । प्रातःकालीन सूर्य के सौम्य मुख, मध्याह्न सूर्य का उद्‌भासित तेज, अपराह्न सूर्य पर छाया की रेखा । बगल में छाया देवी का मंदिर । सुन्दर युवक-युवतियाँ, नर्तक-नर्तकी, सुन्दर नारियों की अनगिनत अदाएँ, स्यालभंजिकाएँ, सेना और सेनापति, वीणा, पखावज, मुरली बजानेवाली युवतियाँ, देखते रहो । छोटी से छोटी मूर्तियाँ, सुई की नोंक से बनाई गईं लताएँ । और वे विशाल अलसाती, बलखाती, आपस मैं लिपटी नाग-नागिनों की काले संग मरमर से बनी दहलीजें । सबका वर्णन तो कोई नहीं कर सकता । जीवन का कोई दृश्य छूटा नहीं । पत्थरों पर अंकित विशाल मानव-जीवन । यह काम तो केवल उत्कल के कुशल कलाकार ही कर सकते थे । बारह सौ कारीगर, श्रमिक, कलाकार, स्थपति सोलह साल तक अथक श्रम करते रहे । नरसिंह देव बीच-बीच में देखने जाते । कामगरों की, अपनी प्रजा की मन ही मन प्रशंसा करते ।

लेकिन आखिर में एक झटका। मंदिर इतना बड़ा हो गया कि उस पर कलश नहीं बैठाया जा सका। सारे कारीगर परेशान । ऊपर से राजा का हुक्म जल्दी काम पूरा करो । बिशू जब घर से चला था तो उसका बेटा पैदा ही नहीं हुआ था । वह बड़ा हुआ, माँ से पता लेकर पिता से मिलने गया । ऐसे वक्त पहुँचा जब सब माथा ठोंक रहे थे । लड़का होनहार था, घर में निर्माण कला की जो पोथियाँ थीं, सबको पढ़ चुका था । उसने पिता से अनुमति ली । मंदिर के शिखर का निर्माण दो दिनों में पूरा हो गया । सब खुश हुए । लोगों ने कहा जो काम बड़े बड़े कारीगरों के हाथ नहीं हो सका था, एक बालक ने कर दिखाया । बालक धर्मपद ने मंदिर निर्माण करने का यश अपने ऊपर नहीं लिया । वह श्रेय तो सारे बढ़ई कुल को मिलना चाहिए । दूसरे दिन सुबह बालक मिला नहीं, पता नहीं कहाँ गया !

सबसे पीछे बना मंदिर – सबसे पहले टूट गया । पता नहीं कैसे ? टूटता ही गया । आज मुखशाला ही साबूत बची है । लेकिन बाकी सब खण्डहर।

पर उन खंडहरों में आज भी रोज हजारों यात्री घूमते रहते हैं । आँखें गड़ाकर उसके स्थापत्य को देखते है । टूटी फूटी मूर्त्तियों में आज भी मुस्कान खिली रहती है । उनके मन के भाव सहज ही पढ़ा जा सकता है ।

इस भव्य मंदिर को देखने के लिए पुराने जमाने से ही विदेशी पर्यटक आते रहते हैं । मूर्त्तिकला के पारखी हावेल साहब ने लिखा है –

''अगर यह यूरोप या अमेरिका होता तो ये भग्न मूर्त्तियाँ अपनी उच्चता और सौंदर्य की छटाएँ बड़े बड़े म्यूजियम में दिखा रही होतीं । पर दुर्भाग्य !!''

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि अपने भग्न रूप में कोणार्क आज भी संसार काएक अजूबा बनकर खड़ा है ।

शब्द		अर्थ
अजूबा	–	अनोखा, अनूठी
ललाई	–	लालिमा
निराली	–	अनोखी
फौरन	–	तुरंत
आवभगत	–	स्वागत सत्कार
ताना	–	व्यंग्य
तरकीब	–	उपाय
नींव	–	आधार
हुकम	–	आदेश
स्थपति	–	भवन निर्माण करनेवाला
अदाएँ	–	मुद्राएँ
स्यालभंजिकाएँ	–	सुंदर नारियाँ
अथक	–	बिना थके
कुशल	–	प्रवीण
साबूत	–	अविकल, अखण्ड
खंडहर	–	भग्नावशेष

अनुशीलनी

भाव बोध और विचार :

(क) मौखिक:

1. बच्चो ! तुममें से किस किस ने कोणार्क मदिंर देखा है ? उस मंदिर की कला का वर्णन बारी बारी से कीजिए ।
2. मंदिर के इतिहास को जानने का प्रयास कीजिए ।

(ख) लिखितः

(i) किस राजा ने कोणार्क मंदिर का निर्माण करवाया था ?

(ii) राजा के मन मे मंदिर बनाने का विचार कैसे आया ?

(iii) किस घटना से शिबू सामंतराय को अक्ल आई ?

(iv) कोणार्क मंदिर के दीवारों पर कैसी-कैसी मूर्त्तियाँ हैं ?

(v) इस मंदिर में सूर्यदेव के कितनी और कैसी मूर्त्तियाँ हैं ?

(vi) मंदिर का शिखर बनाने में किसका विशेष योगदान रहा ?

(vii) मूर्त्तिकला के पारखी हावेल ने उस मंदिर के बारे में क्या कहा ?

भाषा बोध :

(क) इन शब्दों के अर्थ बताइए :

दुनिया, वक्त, धाबा, तरकीब, परास्त, घुड़सवारी, जलराशि, फौरन, शिखर, संगमरमर, पोथियाँ, यश, श्रेय, दुर्भाग्य ।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए :

1. झाऊ, पुन्नाग, केतकी, हेन्ताल जैसे ---------- पगडंडी थी ।
2. बड़े-बड़े ---------- में डलवाये गए ।
3. तुम बीच थाली में से---------- से खाओ ।
4. एकदम नीचे ----------, उसके ऊपर ---------- विराट मंदिर रखा ।
5. प्रातः कालीन सूर्य के ----------, मध्यान्न सूर्य की ----------, अपराह्न सूर्य पर ---------- ।
6. वे विशाल अलसाती, बलखाती, ---------- की काले --------- बनी दहलिजें ।
7. लेकिन आखिर में ---------- ।
8. मंदिर के ---------- पूरा हो गया ।

(ग) इनके समान अर्थ वाले शब्द लिखिए :

अजूबा, सागर, तरुलता, जल, पत्थर, विराजमान, अरुण, उत्कल, पोथियाँ, होनहार

(घ) इनके विलोम शब्द लिखिए :

निर्माण, बराबर, फौरन, तेजी से, वीरता, कुशल, यश

(ङ) इन शब्दों को वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

आवभगत, निराली, कुशल, हुक्म, फौरन, खंडहर, कारीगर, श्रमिक, कलाकार, स्थपति ।

(च) निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दो के कारक बताइए :

क) मोहन ने खाना खाया ।

ख) मैंने हरि को पत्र भेजा ।

ग) वृक्ष से पत्ते गिर रहे हैं ।

घ) राम ने रावण को बाण से मारा ।

ङ) वह मेरे लिए भोजन लाएगा ।

च) वह दिनेश की छतरी है ।

(छ) निम्नलिखित शब्द दो शब्दों के संयोग से बने हैं । प्रथम शब्द का अंतिमवर्ण 'त्' परवर्त्ती शब्द के प्रथम वर्ग के संयोग से परिवर्तित हो गया है । यह 'व्यंजन सन्धि' है ।

क) जगत् + आनन्द = जगदानन्द

ख) शरत् + चन्द्र = शरच्चन्द्र

ग) सत् + जन = सज्जन

घ) उत् + लेख = उल्लेख

सन्धि कीजिए :

उत् + चारण =

उत् + घाटन =

सत् + चरित्र

उत् + श्वास =

उत् + छिन्न =

इस प्रकार दो व्यंजनों की संधि के बारे में व्याकरण की पुस्तक से जानिए ।